



Be Mains Ready

तापीय व्युत्क्रमण का आशय स्पष्ट कीजिये तथा इसकी उत्पत्तिके लिये आदर्श दशाओं की चर्चा कीजिये। (250 शब्द)

17 Aug 2019 | रवीजन टेस्ट्स | भूगोल

दृष्टिकोण / व्याख्या / उत्तर

प्रश्न वचिछेद

- तापीय व्युत्क्रमण तथा उसकी उत्पत्तिके लिये आदर्श दशाएँ बताएँ।

हल करने का दृष्टिकोण

- तापीय व्युत्क्रमण को स्पष्ट करें।
- इसकी उत्पत्तिके लिये आदर्श दशाओं की चर्चा करें।

सामान्यतः ऊँचाई बढ़ने पर तापमान में गिरावट आती है, जसि सामान्य ह्रास दर कहते हैं। कुछ मौसमी दशाओं में सामान्य ह्रास दर उलट जाती है अर्थात ऊँचाई बढ़ने पर तापमान में वृद्धि होती है तो इसे ही तापीय व्युत्क्रमण या प्रतिलोमन कहते हैं। तापमान व्युत्क्रमण के लिये आदर्श दशाएँ नमिनलखिति हैं-

- **जाड़े की लंबी रात-** ऐसी दशा में तीव्र पार्थवि विकिरण होता है जसिसे धरातल के निकट की वायु ऊपर की वायु से अधिक ठंडी हो जाती है तथा तापीय वलिमता की दशा उत्पन्न हो जाती है।
- **स्वच्छ अथवा मेघ वहीन आकाश-** मेघ पार्थवि विकिरण के रास्ते में एक अवरोधक का कार्य करता है। मेघ वहीन आकाश होने से पृथ्वी पार्थवि विकिरण द्वारा तीव्र गति से ठंडी होती है, जबकि ऊपर की हवा अपेक्षाकृत गर्म होती है।
- **शांत व शुष्क वायु-** शुष्क वायु की मौजूदगी में पृथ्वी द्वारा छोड़ी गई ऊष्मा आसानी से धरातल से दूर चली जाती है। वायु के शांत होने से आस-पास के क्षेत्रों से ऊष्मा का आदान-प्रदान नहीं होता है, जसिसे तापीय व्युत्क्रमण की दशा उत्पन्न होती है।
- **वायु अपवाह-** अंतरपर्वतीय घाटियों में वायु अपवाह के कारण पर्वतों की ठंडी हवा पर्वतीय ढलानों के सहारे घाटी की तली में उतर आती है और गर्म हवा के नीचे एकत्र हो जाती है, जसिसे तापीय व्युत्क्रमण उत्पन्न होता है।

वाताग्र की अवस्था में ठंडी वायु के ऊपर गर्म वायु के आरोहति होने से तापीय व्युत्क्रमण होता है।